# मेरी रेलयात्रा

15 मई से हमारी गर्मियों की छुट्टियाँ हो गई। हमने गर्मियों की छुट्टियाँ मसूरी नामक स्थान पर बिताने का निर्णय किया। हमें पहले रेलगाड़ी से देहरादून जाना था। मैं बहुत खुश था क्योंकि मैं पहली बार रेलगाड़ी से यात्रा करने जा रहा था।

रात को एक टैक्सी में सामान रखकर हम स्टेशन पहुंचे। स्टेशन पर बड़ी भीड़ थी। परन्तु पिताजी ने पहले से ही देहरादून की टिकटें ले रखी थीं और सीटें रिजर्व करा रखी थीं। हम आराम से गाड़ी में जा बैठे। रात के सवा आठ बजे थे। गाड़ी सीटी बजाकर चल पड़ी। बिजली के खम्भे, पेड़ आदि पीछे छूटने लगे।छक-छक, फक-फक की आवाज हमें अच्छी लग रही थी।

मैं गर्दन बाहर निकालकर दूर तक का दृश्य देख रहा था, क्योंकि पूर्ण चन्द्रमा का प्रकाश फला हुआ था। कुछ देर बाद गाड़ी एक स्टेशन पर ठहर गई। सामान बेचने वाले चिल्ला रहे थे। कुछ लोग गाडी से उतर रहे थे, कुछ

चढ़ रहे थे। इंजन ने चीख मारी। गार्ड ने सीटी बजाई और हरी झंडी दिखलाई। गाड़ी फिर चल पड़ी। थोड़ी देर में गाड़ी बहुत तेज चल रही थी। मैं तथा मोहन बहुत खुश थे। यह हमारी पहली रेलयात्रा थी।